Subject- G6 Gender, School & Society

Topic- Gender Stereotyping (लिंग-रूढ़िवादिता)

भारत की स्वतंत्रता और समाज-सुधार के गौरवशाली इतिहास के बावजूद आज भी सच्चाई यही है कि हमारा समाज पुरातन स्त्री-विरोधी रूढ़िवादी विचारों से मुक्त नहीं हुआ है। रूढ़िवाद एक ऐसी विचारधारा है जो पारंपरिक मान्यताओं का अनुकरण तार्किकता या वैज्ञानिकता के स्थान पर केवल आस्था एवं विश्वास के आधार पर करती है। यह विचारधारा नए तथा बिना आजमाए हुए विचारों को अपनाने के बजाय पुराने विचारों को कायम रखने का समर्थन करती है।

हमारे समाज में प्राचीन काल से ही बहुत सारी रूढ़िवादी परम्पराओं का जाल-सा बिछा है। सभी परम्पराओं में किसी-न-किसी रूप में स्त्रीयाँ ही प्रभावित होती हैं।

कुछ प्रमुख रूढ़िवादी परम्पराएं :-

(i) कन्या को पराया धन मानना
(ii) कर्म की अपेक्षा भाग्य पर विश्वास
(iii) पढ़ाने से लड़कियाँ बिगड़ जायेगी
(iv) स्त्री को वही कार्य करना चाहिये, जो पुरुष कहे।
(v) मुखाग्नि पुत्र ही देगा।
(vi) दहेज प्रथा
(vii) कन्या-भ्रूण हत्या
(viii) पुत्र जन्म न देनेवाली महिलाओं को प्रताड़ना
(ix) बाल-विवाह
(x) शारीरिक तथा मानसिक रूप से बालकों की अपेक्षा कमजोर

P.T.O

Scanned with CamScanner

② 20.4.2020

आधुनिकरण के पश्चात, अपरोक्ष विश्वासों, रूढ़िवादी परम्पराओं में परिवर्तन आया है। आज समाज में तमाम तरह के बंधनों से जकड़ी महिलाएँ स्वयं की मुक्ति और अपनी अस्मिता के लिये देश के हर कोने से आवाज उठा रही है। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि जब तक महिलायें स्वयं अपने विकास के लिये आगे नहीं आयेंगी तब तक उनका विकास असंभव है। स्त्री से जुड़े हर तरह के शोषण के विरुद्ध राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महात्मा ज्योति बा फूले आदि महान लोगों ने आवाज उठाई और महिलाओं को तमाम तरह के सामाजिक बन्धनों व रूढ़ियों से मुक्त कराकर उन्हे उनका हक दिलाया।

आधुनिक स्त्रियाँ बरसों से रूढ़िवादी परम्परा की बेड़ियों में बंधी रहना नहीं चाहती है। आधुनिकता ने स्त्री की सोयी हुई चेतना में जान भरने का काम किया है। वह पितृसत्ता का विरोध करती हुई नजर आ रही है। उनके पास अपनी स्वतंत्र राय है।

निष्कर्ष - रूढ़ियाँ - हमारे समाज का हिस्सा है लेकिन आँख बन्द करके उनका पालन न करें। सोच की संकीर्णता, रूढ़िवादिता इस तथ्य को जन्म देती है कि व्यक्ति अपने सामाजिक, व्यक्तिगत और आर्थिक विकास में रुक जाता है। वैज्ञानिक खोजें एक-एक कर हर अन्धविश्वास के पीछे छिपी सच्चाई को बेपर्दा कर उसकी असलियत को तहस-नहस कर रही है।

— X —

Subject - C-6 Gender, School & Society

Topic - School (विद्यालय)

चुनौतीपूर्ण लिंग के संबंध में विद्यालय की भूमिका:- (1)

विद्यालय क्या है? - विद्यालय एक ऐसा स्थल है जहाँ पर विद्या प्रदान की जाती है अर्थात् जहाँ विद्यार्जन होता है। विद्यालय ही वह स्थान है जहाँ सामूहिकता की भावना, सामाजिकता, परोपकार, सहयोग व समानता की नींव पड़ती है। विद्यालयों में बिना किसी भेदभाव के बालक-बालिकायें समूह में रहकर साथ-साथ कार्य करते हैं, एक ही पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-पुस्तक का अध्ययन कर एक जैसा विकास करते हैं, जिससे लिंगीय असमानता में कमी आती है।

परिभाषायें :- जॉन डीवी (John Dewey) के अनुसार :- "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास की दृष्टि से उसे विशिष्ट क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा दी जाती है।"

जे. एस. रॉस (J. S. Ross) :- "विद्यालय वे संस्थायें हैं जिनको सभ्य मानव ने इस दृष्टि से स्थापित किया है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिये बालकों की तैयारी में सहायता मिले।"

अतः हम कह सकते हैं कि विद्यालय समाज का लघु रूप है, सद्भावना, प्रेम तथा विश्व-शान्ति का केन्द्र है। विद्यालय एक सुखी परिवार, एक पवित्र मंदिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु रूप में एक राज्य तथा एक मनमोहक वृन्दावन है, इसमें इन सब बातों का मिश्रण होता है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

(4) 21/4/2020

विद्यालयी शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ समाज, राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। विद्यालय की स्थापना शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ निम्न उद्देश्यों के लिये की जाती है:—

(i) राष्ट्रीय एकता का विकास
(ii) सर्वांगीण विकास
(iii) सांस्कृतिक विकास
(iv) स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास
(v) आदर्श नागरिकों की तैयारी
(vi) कुशलता दिलाना
(vii) उद्देश्यपूर्ण शिक्षा
(viii) लोकतंत्र की सफलता
(ix) तर्कपूर्ण मस्तिष्क का विकास
(x) स्वअनुशासन की प्रवृत्ति का विकास

राष्ट्रीय एकता का विकास:- विद्यालय की स्थापना का महत्वपूर्ण उद्देश्य है - राष्ट्रीय एकता का विकास। राष्ट्रीय एकता अगर सुदृढ़ तथा मजबूत है तभी हम चैन से रह सकेंगे, हमारा देश रहेगा। इसकी सीख हमें विद्यालय से ही मिलती है।

सर्वांगीण विकास:- सर्वांगीण विकास होना विद्यालय की स्थापना का सर्वोत्तम उद्देश्य है। सर्वांगीण विकास की नींव विद्यालय से होती है। इसके द्वारा ही हम सभी क्षेत्रों में कुशलता हासिल कर सकते है।

—x—

Scanned with CamScanner

Topic - चुनौतीपूर्ण लिंग के संबंध में विद्यालय की भूमिका (22)

सांस्कृतिक विकास :- संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। वह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता तथा उन्नत करता रहता है। अतः विद्यालय की स्थापना करने का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक विकास है। देश की सभ्यता तथा संस्कृति को आगे ले जाने में विद्यालय मुख्य भूमिका का निर्वहन करता है।

आदर्श नागरिक की तैयारी :- लोकतंत्र में विद्यालय का विशेष महत्व होता है। स्कूल के द्वारा बालकों को नागरिकों के कर्त्तव्यों तथा अधिकारों का ज्ञान होता है तथा उनमें प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, अनुशासन एवं उत्तरदायित्व आदि अनेक गुण विकसित होते हैं। इन गुणों से सुसज्जित होकर बालक प्रौढ़ व्यक्ति के रूप में उपयोगी नागरिक सिद्ध होते हैं।

उद्देश्यपूर्ण शिक्षा :- उद्देश्यपूर्ण शिक्षा से ही सभ्य समाज का निर्माण संभव है। ज्ञान के बल से ही व्यक्ति का विकास होता है तथा वह अपने जीवन में सुख-शांति का अनुभव करता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जो कि उद्देश्यपूर्ण शिक्षा देने में समर्थ है।

तर्कपूर्ण मस्तिष्क का विकास :- विद्यालय द्वारा बालकों को ऐसा ज्ञान देना है जो स्वयं साध्य न हो,

P.T.O

Scanned with CamScanner

(6) 22/4/2020

अपितु साध्य प्राप्त करने का साधन हो। विद्यालय बालकों को अज्ञात भविष्य के लिये नवीन मूल्यों का निर्माण करता है। विद्यालय तर्कपूर्ण मस्तिष्क का विकास करने का मुख्य स्थान होता है।

कुशलता खिलाना :-

कुशलता हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम किसी चीज का गहण अध्ययन करते हैं। विद्यालय में ही अध्ययन कर ही हम किसी काम या कार्य में दक्ष (निपुण) बनते हैं। विद्यालय की स्थापना भी इसी उद्देश्य से की जाती है कि हम किसी कार्य मे दक्ष बने।

परिवार तथा विश्व को जोड़नेवाली कड़ी :-

विद्यालय बालक के पारिवारिक जीवन को बाल जीवन से जोड़नेवाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसका कारण यह है कि स्कूल में रहते हुये बालक अन्य बालकों के साथ सम्पर्क स्थापित करता है। इससे उसका दृष्टिकोण विशाल हो जाता है जिससे उसके बाल समाज से सम्पर्क स्थापित करने मे कोई कठिनाई नहीं होती।

ध्यान देने की बात है कि आरम्भ में स्कूलों से केवल उच्चवर्ग के लोगों ने ही लाभ उठाया। जनसाधारण के लिये स्कूलों की स्थापना करना केवल आधुनिक युग की देन है। जैसे-जैसे जनतंत्रवादी दृष्टिकोण विकसित होता गया, वैसे-वैसे स्कूलों के रूप में परिवर्तन होता चला गया।

—x—

Scanned with CamScanner

Subject - C-6 Gender, School & Society

Topic - Gender Roles in Society Through FAMILY

लिंग के सन्दर्भ में परिवार की भूमिका :-

लिंग की समानता हेतु शिक्षा में 'प्रथम पाठशाला' के रूप में जाने जानेवाले परिवार की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पुरुष तथा महिला समाज के दो ऐसे लिंग है जो एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं, बल्कि पूरक है। सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण इन दोनों लिंगों के द्वारा ही होता है। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे है। परिवार एकाकी हो या संयुक्त, सभी परिवारजन जब तक उनोतीर्ण लिंग की समता की विचारधारा को नहीं अपनायेंगे, यह कार्य प्रभावी नहीं हो सकता।

'परिवार वह प्रथम अभिकरण है जो बालक के विकास पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। यह मानव समाज की प्राचीनतम तथा आधारभूत इकाई है।

परिभाषाये :-

फ्रोबेल :- "मातायें बालकों की आदर्श गुरु होती है तथा परिवार द्वारा प्राप्त अनौपचारिक शिक्षा सर्वाधिक प्रभावशाली और प्राकृतिक होती है।"

पेस्टालॉजी :- "परिवार प्यार तथा स्नेह का केन्द्र शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान, बालक का प्रथम विद्यालय है।"

रूसो :- "शिक्षा जन्म से प्रारम्भ होती है तथा माता उपयुक्त परिचारिका है।"

P.T.O.

Scanned with CamScan

इस प्रकार परिवार, लिंग की समानता के आरम्भ की महत्वपूर्ण इकाई है तथा यह परिवर्तन परिवार से होते हुये समाज तथा सम्पूर्ण देश में धीरे-धीरे होता है।

जीवन में परिवार का महत्व:-

जब हमारे पास एक परिवार होता है तो बाहरी चुनौतियों का सामना करना आसान होता है। एक परिवार में रहने का लाभ पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया, जैसे:—

(i) खुशी और गम बाँटने के लिये,
(ii) वित्तीय सुरक्षा
(iii) परिवार ही बालक के चारित्रिक विकास, व्यक्तिगत विकास तथा समुचित शिक्षा व्यवस्था का दायित्व लेता है।
(iv) बच्चे के समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार से ही आरम्भ होती है।
(v) बच्चे के अनुशासन की नींव परिवार में ही सर्वप्रथम पड़ती है।
(vi) सामाजिक उत्तरदायित्व तथा देश-प्रेम की भावना का विकास परिवार में ही होता है।
(vii) बच्चे के अन्दर त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, धैर्य, ईमानदारी तथा सहयोग एवं परोपकार जैसे गुणों का विकास परिवार में रहकर ही सम्भव है।
(viii) समानता तथा न्याय के आदर्शों का विकास परिवार में ही होता है।

Scanned with CamScanner

Subject - C-6 Gender, School & Society

Topic - परिवार के कार्य (Functions of Family)

बालकों की शिक्षा और समग्र विकास का कार्य परिवार में सम्पन्न होता है। पारिवारिक वातावरण केही बालक का भविष्य सुनिश्चित करता है।

परिवार के कुछ प्रमुख कार्य निम्न है:-

(i) शारीरिक विकास तथा भरण-पोषण का कार्य
(ii) व्यक्तित्व विकास का कार्य
(iii) मानसिक विकास का कार्य
(iv) संवेगात्मक विकास का कार्य
(v) नैतिक एवं चारित्रिक विकास का कार्य
(vi) व्यावसायिक विकास का कार्य
(vii) धार्मिक विकास का कार्य
(viii) सामाजिक विकास का कार्य
(ix) लैंगिक मुद्दो पर सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास
(x) सांस्कृतिक संरक्षण एवं हस्तान्तरण का कार्य

शारीरिक विकास तथा भरण-पोषण का कार्य :-

परिवार का प्रमुख कार्य परिवार का शारीरिक विकास तथा भरण-पोषण करना है। परिवार द्वारा ही बच्चे की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसके लिये परिवार समुचित भोजन, प्रकाशयुक्त घर, स्वच्छ वातावरण तथा स्वच्छता सम्बन्धित सुविधाओं का प्रबन्ध करता है।

व्यक्तित्व विकास का कार्य :- व्यक्तित्व की आधारशिला

P.T.O

Scanned with CamScanner

परिवार में ही खड़ी होती है। बालक के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिये उसे घूमने-फिरने, लोगों से मिलने-जुलने तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अवसर परिवारवालों को देना चाहिये।

मानसिक विकास का कार्य :- परिवार बालकों के केवल शारीरिक विकास का ही कार्य नहीं करता है बल्कि उनके मानसिक विकास का भी कार्य करता है। मानसिक विकास के कार्य सम्पादन के लिये विचार, स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आजादी, कल्पना तथा जिज्ञासा की वृद्धि द्वारा मानसिक विकास का कार्य सम्पन्न किया जाता है।

संवेगात्मक विकास का कार्य :- परिवार में सकारात्मक संवेगात्मक विकास के कार्य; जैसे- सहयोग, प्रेम, दया, महिलाओं का सम्मान, जीवों के प्रति दया कर संवेगात्मक विकास किया जा सकता है। परिवार में ही बालक की मानवीय संवेदनाएँ जाग्रत होती है।

नैतिकता तथा चारित्रिक विकास का कार्य :- परिवार के सदस्यों का अनुकरण करके बालक बहुत-सी बातें सीखता है। उस पर परिवार के लोगों की नैतिकता तथा चरित्र का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। जिन परिवारों में सादा जीवन उच्च-विचार, ईमानदारी, सत्य, कर्तव्यनिष्ठा, सहयोग तथा प्रेम के भाव रहते हैं वहाँ बालकों में भी इन्हीं नैतिक गुणों का विकास होगा। इसके विपरीत जिन परिवारों में बालक स्वार्थपरता, दयाहीनता, चोरी, बेईमानी, असत्य आदि बातें सीखते हैं, उस परिवार के बच्चों का नैतिक तथा चारित्रिक पतन निश्चित है।

—x—

Scanned with CamScanner

Subject :- PSS-10 Pedagogy of Science (Biological Science)

Topic - Nature of Science (विज्ञान की प्रकृति)

विज्ञान को परिभाषित करना बहुत आसान नहीं है। सामान्यतः किसी विषय का क्रमबद्ध ज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान को वैज्ञानिक तथ्यों का एक संगठित समूह कहा गया है जो समस्त समस्याओं को हल कर सकती है।

गुच (Gooch) के अनुसार :- "विज्ञान घटना विशेष के कारण तथा प्रभाव के मध्य सम्बन्ध विषयक ज्ञान का क्रमबद्ध अंग है।"

आइंस्टीन के अनुसार :- "हमारी ज्ञानात्मक अनुभूतियों की अस्त-व्यस्त विभिन्नता को तर्कपूर्ण एक रूपविचार प्रणाली बनाने के प्रयास को विज्ञान कहते है।"

आर्थर वाल्फोर के अनुसार :- "विज्ञान सामाजिक परिवर्तन का एक महान उपकरण है। आधुनिक सभ्यता के विकास में सहयोगी सभी क्रांतियों में सबसे अधिक शक्तिशाली है।"

अतः हम कह सकते हैं, कि विज्ञान किसी भी विषय को पक्षपात रहित क्रमबद्ध, सुसंगठित व सुव्यवस्थित ज्ञान है, जो अनुभवों पर आधारित है।

विज्ञान

- भौतिक विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- जीव विज्ञान

P.T.O

Scanned with CamScanner

विज्ञान की प्रकृति :-

विज्ञान एक व्यापक अवधारणा है। जीव विज्ञान, विज्ञान की एक शाखा है, जिसमें जीवित पौधे तथा जन्तुओं का अध्ययन किया जाता है। अन्य विज्ञान की तरह जीव-विज्ञान का भी एक स्वतंत्र अस्तित्व है।

जीव विज्ञान की प्रकृति के अन्तर्गत निम्न गुण आते है :-

(i) विषय विकास का इतिहास
(ii) विषय की भाषा
(iii) जीव विज्ञान ज्ञानेन्द्रियों का विज्ञान है
(iv) जीव विज्ञान की विधि
(v) कारण-प्रभाव सम्बन्ध (Cause & Effect Relationship)
(vi) गतिशीलता (Dynamism)
(vii) सौन्दर्य अनुभूति (Aesthetic Sensitivity)
(viii) संगठन (Organization)

विषय विकास का इतिहास :- प्रत्येक विषय का अपना विकास का इतिहास होता है, इसी प्रकार जीव-विज्ञान का भी अपना इतिहास है। विभिन्न प्रकार की औषधियों की खोज, अच्छे प्रकार के खाद्य पदार्थों का निर्माण, शरीर की कीटाणुओं से सुरक्षा आदि भी इसी विषय के अन्तर्गत आती है। कौन-कौन नवीन खोजे हुई उनका ज्ञान होता है।

विषय की भाषा :- जीव विज्ञान की भाषा अन्य विषयों की भाषा से भिन्न है। इसके अपने पद (Terms) जैसे- धमनी (Artery), कोशा (Cell), तन्तु (Tissue) आदि है जो कि अन्य विषय में प्रयोग नहीं किए जाते हैं।

— X —

Scanned with CamScanner